Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVII, Jan-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

श्री जगदीशचंद्र माथुर के साहित्य का मूल्यांकन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IX, Issue No. XVII, January-2015, ISSN 2230-7540

श्री जगदीशचंद्र माथुर के साहित्य का मूल्यांकन

Kanta Devi

M.A. Hindi, Net

----------------------------------X----------------------------------

''ओंस की एक बूंद सी होती हैं बेटियां

स्पर्श खुरदुरा हो, तो रोती है बेटियां

दूसरों की खुशी में, खुश होती हैं बेटियां

दूसरों के अश्कों को देख, खुद रोती हैं बेटियां

रोशन करेगा तो बेटा एक ही कुल को

दो–दो कुलों की लाज होती हैं बेटियां

बेटा अगर घर चलाता है, तो घर बनाती हैं बेटियां

कोई नहीं है दोस्तों, इस दुनिया में कम

बेटा अगर हीरा है, तो मोती हैं बेटियां

बेटा अगर विनायक है, तो लक्ष्मी हैं बेटियां

बेटा अगर दीपक है, तो रोशनी है बेटियां

विधी का विधान है, यही दुनिया की रस्म है,

मुट्ठी में भरी निर–सी होती है बेटियां ।। ''

स्वाभिमान दो शब्दों से मिलकर बना है स्व + अभिमान। स्वयं के पर गर्व होना परंतु उचित और अनुचित का ध्यान रखते हुये। अपने को किसी के सामने अनावश्यक रूप से न झुकने देना ही स्वाभिमान है, परंतु यह घमंड और अकड़ से अलग है और अर्थात अपनी बेइज्जती किसी भी हालत में न होने देना। प्राचीन संस्कृत साहित्य से लेकर अद्यतन साहित्य तक नारी किसी न किसी रूप में साहित्य के केन्द्र में दिखायी देती है। वह प्राचीन काल में महाशक्ति, महासरस्वती कहकर वंदनीय मानी गयी। देवी, साहबी, सती, पवित्रता कहकर उसकी उपासना की गयी। इन सभी स्तुतियों के बावजूद यह ध्रुव सत्य है कि नारी को हमेशा अपने सम्मान को बनाये रखने के लिए संघर्ष करना पड़ा है। उसे हमेशा सामान्य के बजाये विशिष्ट जीवन ममता, त्याग, बलिदान के नाम पर जीना पड़ा। करना पड़ा है उसे अपने स्वाभाविक भावनाओं और इच्छाओं का दमन। अपमान के विष को उसे बार–'बार पीना पड़ा है। परंतु फिर भी कोई स्त्री कभी शिव नहीं बन सकी। उसे तो हमेशा अपमान के अग्नि कुण्ड में जलकर सती बनना पड़ा।

एकांकी संकलन 'भोर का तारा', के आधार पर, 'मकड़ी का जाला' में स्वप्न के माध्यम से पिछली घटनाओं का निराकरण प्रस्तुत किया गया है। 'कलिंग विजय' में विशाल सम्राट अशोक देश द्रोही के राजमहल में गायिका अकेले ही उसे ललकारने पहुंच जाती है और उसी उसके विचार को परिवर्तित कर उसी देश का प्रेमी बना देती है। 'रीढ़ की हड्डी' हिन्दू मध्यवर्ग की छोटी किन्तु विषम समस्या पर प्रकाश डालता है। 'भोर का तारा' में प्रेम और कर्तव्य को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब ये नाट्य एकांकी लिखे गये तब से युग ही बदल गया। इन नाटकों की शैली और आत्मा में उसं जमाने की प्रतिध्वनि मिलेगी। फिर भी कुछ समस्याएं शाश्वत और आदर्श वादिता भी बुद्धिवाद की जंग के बावजूद प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में निखर ही पड़ती है।

जगदीश चन्द्र माथुर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

जगदीश चन्द्र माथुर सृजनात्मक प्रतिभा के धनी थे। वे 14–15 में वर्ष की आयु से ही लिखने लगे थे। अपने विचारों और मूल्यों में श्री जगदीश चन्द्र माथुर ग्रामीण और नगर, लोक शास्त्रीय संस्कारों व परम्पराओं के संबंध में पक्षधर थे। माथुर जी का जन्म सन् 1917 ई. मे 16 जुलाई को उत्तर प्रदेश के जनपद बुलंदशहर के खुर्जा नामके कस्बे में हुआ था।

''उच्च तथा निम्न मध्य वर्ग के जीवन के विविध पहलुओं पर उन्होंने प्रकाश डाला है। स्त्रियों की बेबसी, आधुनिक शिक्षित समाज का छिछोरापन, वैवाहिक गुत्थियां, दाम्पत्य जीवन के नये मापदण्ड, प्रेम का अस्थिर स्वरूप, गृह कलह पलायनवाद, मध्यवर्ग के दैनंदिन जीवन की दयनीयता, बाह्याडम्बर और मिथ्या दिखावा उनके सामाजिक एकांकियों के विषय बने हैं।''1

एकांकी सारांश :

(1) कलिंग विजय 1939 : झूठा अधिमान मनुष्य को पशु बना देता है। यह भी क्या नीति है कि एक व्यक्ति के लिए भयंकर नर संहार हो, भीषण रक्तपात हो। राज्य लिप्सा मनुष्य को मनुष्यता की सभी मर्यादाओं को तोड़ने के लिए बाध्य करती है। गायिका अर्थात एक तुच्छ भिक्षुणी अपने व अपनी जन्मभूमि की रक्षा के लिए उन्हीं के राज्यमहल में प्रवेश करती है। जिसने कल ही एक लाख निर्दोष मनुष्यों का खून बहाकर भारतवर्ष का सम्राट हुआ है। ऐश्वर्य और सत्ता के लोभ ने किसके मन को कलंकित नहीं किया है ?

(2) रीढ़ की हड्डी 1939 : आज के नवयुवकों पर करारी चोट होने के साथ–साथ नवयुवती की ओजस्विता के प्रति आदर

www.ignited.in

प्रकट करने वाला यह एकांकी है। आज के युवक–युवतियाँ एक दूसरे को पसंद करती समय किस दृष्टि से देखते है, उसका दर्शन इसमें होता है।

गोपाल प्रसाद जैसे सनातनी बाप और शंकर जैसे निकम्मे पुत्र की खिल्ली उड़ायी गयी है। स्नातक उमा जो चतुर, बुद्धिमान नवयुवती की प्रतिनिधि है। बाप–बेटे को सुन उन दोनों को आड़े हाथों लेती है। जिसके कारण वे वहां से खिसक जाते है। लड़के में चाहे जो ऐब हो उससे कोई भी प्रश्न पूछा नहीं जा सकता इसके विपरीत लड़की चाहे जितनी अच्छी हो उसकी नापतौल हर तरह से की जाती है। जैसे उसकी अपनी कोई हस्ती ही न हो।

(3) भोर का तारा 1937 : कवि और राजनीतिज्ञ की महत्ता स्थापित की गई है। शांन्ति के अवसर पर श्रृंगार में मग्न रहने वाला वीर सैनिक युद्ध के नगाड़े बजते ही केसरिया बनाना पहन कर युद्ध के लिए प्रस्थान करता है। वैसे ही कवि दोहरा व्यक्तित्व रखता है। वह फूल से भी कोमल भाव मयी कविता लिखकर स्वप्नों का संसार निर्माण करता है, लेकिन प्रसंग आने पर वज्र से भी कठोर लिखकर, सैनिकों को प्रोत्साहित कर देश की रक्षा में सहायक बनता है। इस तरह कवि राजनीतिज्ञ अथवा सैनिक से भी श्रेष्ठ साबित होता है। प्रेमी जीवन की मानसिकता का थी सवाल उठाया गया है।

जगदीश चंद्र माथुर के एकांकी में नारी स्वाभिमान :

(1) 'कलिंग विजय' एकांकी में नारी स्वाभिमान : अधिकार लिप्सा के कारण किये गये आंतरिक आक्रमणों में मगध सम्राट अशोक का कलिंग राज पर किया गया आक्रमण सबसे अधिक भयानक और विनाशकारी रहा। कलिंग की राजकुमारी बौद्ध भिक्षुणि अपनी जन्म भूमि के प्रति किये गये अकारण आक्रमण के लिए वह गायिका बनकर विशाल सम्राट अशोक के राजमहल में अकेले ही उसे ललकारने पहुंच जाती है। साथ ही सही मार्ग दिखाने का दृढ संकल्प भी लेती हैं। गायिका के शब्दों में '' मेरे साथ चलिए मैं आपको दिखांगी, मृत्यु का तांडव–नृत्य आपके हृदय है उसमें रक्त है, वैसा ही रक्त और वैसे ही सहस्त्रों हृदय धूल से सने पड़े हैं। सच बताइए सम्राट, क्या यही आपकी विजय है।''2 गायिका सम्राट अशोक की इस तरह की नीति की भर्त्सना करती है। कि आपने यह अच्छा नही किया। आप यह क्यों भूलते है कि वहां के निवासियों का भी नन्हा गांव है, आपकी पत्नि रेखा की तरह उनकी भी पत्नि है, बच्चे है, फिर आपको धनुष चलाते समय यह प्यार क्यों नहीं जागा। गायिका के इस कथन की पुष्टि करते हुए प्रभावती अपनी सखी से कहती है। – ''साम्राज्य की लालसा मनुष्य को पागल कर देती है। मनुष्य की हड्डियों का बना साम्राज्य किस काम का ? खड्ग से लोगों के तन को जीता जा सकता है, मन को नहीं। शस्त्रबल से बना साम्राज्य किसी भी क्षण विद्रोह की भयंकर ज्वाला में भस्म हो सकता है।''3 गायिका के इस तरह वास्तविकता से परिचय कराने पर सम्राट अशोक की आंखे खुल जाती है। और हिंसा न करने की प्रतिज्ञा करता है। अतः गायिका का अपनी जन्मभूमि के प्रति किया गया प्राणपण से रक्षा एक आदर्श स्थापित करता है। गायिका के स्वाभिमान की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह अपने देश द्रोही सम्राट अशोक को स्नेह व सदाचार का पाठ पढ़ाती हुई उसी देश का प्रेमी बना देती है।

(2) 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में नारी स्वाभिमान : उमा एक पढ़ी लिखी स्वाभिमानी आधुनिक नारी है। गोपाल प्रसाद के व्यावहार से उसके आत्म–सम्मान को ठेस लगती है। वह तिलमिला उठती है। इस पर वह किसी की परवाह किए बिना स्पष्ट शब्दों में कहती है।'' क्या जवाब दूं बाबू जी ! जब कुर्सी – मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है पसंद आ गयी तो अच्छा है। वरना'।''4 इसी तरह का खेल आपने मेरे साथ खेला अब मैं चुप नहीं रहूंगी, बहुत सुन चुकी। लड़की हूँ इसका मतलब यह तो नहीं कि कोई कुछ भी आकर कह जाये और मैं सुनती रहूं। पिता के चुप कराने पर भी वह चुप नहीं होती बल्कि अब तो पिता को ही कह देती है कि अब मुझे कह लेने दीजिए – ''बाबूजी ये जो महाशय मेरे खरीददार बनकर आये हैं, इनसे जरा पूछिए कि क्या लड़कियों के दिल नहीं होते? क्या उनको चोट नहीं लगती? क्या वे बेबस भेड़–बकरियां है, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देख–भालकर खरीदते हैं।''5 वह उमा के पिता रामस्वरूप से अपनी बेइज्जती किए जाने की बात कहते है तो वह तीव्र स्वर में कहती है। ''इनकी इज्जत होती है और हमारी बेइज्जती नहीं होती है, जो आप इतनी देर से नापतौल कर रहे है?''6 उमा संकोच के कारण कम बोलती है किन्तु जब वह बोलने लगती है तो शंकर की बाखिया उधेड़कर रख देती है।

(3) 'भोर का तारा' एकांकी में नारी स्वाभिमान : छाया मामूली कवि शेखर के कला की पुजारिन और प्रियतमा भी है। माधव शेखर से प्रार्थना करता है कि वह अपनी ओजमयी कविता से गांव–गांव जाकर वह आग फैला दे, जिससे हजारों लाखों भुजायें अपने सम्राट और देश की रक्षा के लिए शस्त्र हाथ में ले लें। शेखर का भावुक हृदय परिवर्तित हो जाता है। और वह अपने कर्तव्य पथ को समझ जाता है। छाया को माधव की यह बात बहुत चुभती है लेकिन शेखर को उसके प्यार से दूर ले जाने के कारण माधव को डांटती है। छाया के शब्दों में–''अत्यंत पीड़ित स्वर में माधव तुमने वह नारी सुलभ स्वभाव से कुछ तो मेरा प्रभात नष्ट कर दिया''7 विचलित हो जाती है। छाया शेखर के काव्य और प्रेम के प्रति इतनी अधिक स्वार्थी हो जाती है। कि वह अपने कर्तव्य को भूल जाती है। माधव के शब्दों में ''छाया मैंने तुम्हारा प्रभात नष्ट नहीं किया। प्रभात तो अब होगा। शेखर अब तक भोर का तारा था अब प्रभात का सूर्य होगा''8 माधव के समझाने पर छाया मस्तक उठाती है और अपने प्रेम की कर्तव्य के लिए बलिदान कर देती है। अपने पति की प्रतिष्ठा व अपने देश की रक्षा के लिए अपने हृदय को कठोर बना लेती है। कर्तव्य और भावना के संयोग द्वारा आदर्श की स्थापना की गयी है।

जगदीश चंद्र माथुर के एकांकियों का महत्व–हिन्दी एकांकी के क्षेत्र में जगदीश चन्द्र माथुर का नाम उतना ही जाना पहचाना लगता है। जितना कि हिन्दी नाटक के क्षेत्र में प्रथम एकांकी 'मेरी बांसुरी' 1936 दैनिक जीवन की नीरसता सौन्दर्य और भावालोक के आकर्षण में रची गयी है। 'भोर का तारा'1937 कर्तव्य और भावना के संयोग द्वारा आदर्श की स्थापना की गयी है। यह एकांकी आजकल के पाठक को शायद सेंटीमेंटल जान पड़े, पर जब कभी देश की सुरक्षा की चुनौती सामने, आयी इस एकांकी की मांग बढ़ी। 'कलिंग विजय' 1939 सांची के स्तूप उत्कीर्ण मूर्तियों में भी मौर्यकालीन स्थिति लक्षित होती है। ''सम्राट अशोक का कलिंग पर आक्रमण और पश्चाताप से बौद्ध धर्म और अहिंसा का प्रचार''9 ये सभी घटनाएं इतिहास से प्रभावित है। 'रीढ़ की हड्डी' 1939 हिन्दू मध्य वर्ग की छोटी किन्तु विषम समस्या पर प्रकाश डालता है। जिस समस्या को आधार बनाकर उसकी रचना हुई हमारे समाज ने कभी का निपटारा कर लिया 'मकड़ी का जाला' 1941, 'खण्डहर' 1943 और 'कबूतर खाना' 1951 आदि में भौतिकवादी व्यवस्था के बोझ से कोमल भावनाओं को दबते नष्ट होते दर्शाया गया है। इसका सूना वातावरण बहुत कुछ बीते युग की प्रतिध्वनि मात्र हैं क्योंकि नवीन युग की किरानी इस यातना की भागी नहीं । 'बंदी' 1954 सामुदायिक

www.ignited.in

विकास योजना और 'घोषले' परिवार नियोजन का प्रचार लक्षित होता है। लेकिन जब इन्होंने बंदी लिखा था तब सामुदायिक विकास से कोई संबंध नहीं था इसी तरह 'घोषले' की रचना 1948 के आस–पास हुई जब परिवार नियोजन का कोई जिक्र ही न था संघर्षमय कार्य–व्यापार के योग से एकांकी–नाटक नये युग के सर्वथा अनुकूल है।

निष्कर्ष :

माथुर जी की वृत्ति अंतर्मुखी है। वे दुनियादारी की कमजोरियों पर तर्क–वितर्क करना नहीं चाहते। माथुर जी उस समय 1936–37 के ऐसे सफल नाटककार हुए जिन्होंने स्त्री जीवन को लेकर, उसकी पद मर्यादा को लेकर, उसके मान–सम्मान को लेकर रचना की और साथ ही जयशंकर प्रसाद जी का नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' 1933 में गुप्तकालीन भारतीय नारी की समस्याओं का अंकन प्रस्तुत किया गया है। अन्याय का विरोध न करने से अन्याय बढ़ता चला जाता है। जब लड़के वाले लड़की को देखने आते है। तो चाय नाश्ता की प्लेट लेकर लड़की उनके सामने जाती है। तरह–तरह प्रश्न उससे किए जाते हे। जिसका वधु–पक्ष के पास कोई जवाब नहीं होता। इसी को देखते हुए माथुर जी ने 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी में उमा के माध्यम से इस वधु परीक्षा का विरोध किया। आत्म–स्वाभिमान मात्र स्वयं पर हीं नही होता बल्कि समय आने पर देश, समाज व अपनी जन्म भूमि के प्रति भी होता है। 'कलिंग विजय' 'एकांकी की गायिका अपने देश द्रोही सम्राट अशोक के राजमहल में अकेले ही उसे ललकारने पहुंच जाती है। और वह उनके विचार को परिवर्तित कर स्नेह, शीतलता, सहनशीलता व सदाचार का पाठ पढ़ाती हुई देश प्रेमी बना देती है। 'भोर का तारा' की नायिका छाया का प्रेम स्वार्थ पूर्ण नहीं है बल्कि अवसर आने पर वह अपनी भावनाओं को समेट लेती है। जिसमें स्वाभिमान का कुछ भी अंश है। वह दूसरों की सहायता नहीं लेना चाहती है जैसे–रानी लक्ष्मी बाई, रानी दुर्गावती, इंदिरागांधी इसका प्रमाण है। इतिहास कही भी संपूर्ण और अंतिम नहीं होता समय–समय पर नयेपन के प्रवेश की गुंजाइश मौजूद रहती है। ''इतिहास के वर्तमान मोड़ पर सभ्यता पूरी तरह पौरूषीय है एक ताकत की सभ्यता, जिसमें स्त्रियों को एक किनारे धकेल दिया गया है। इसलिए सभ्यता का संतुलन बिगड़ा हुआ है और यह एक युद्ध से दूसरे युद्ध में झोंकी जा रही है। स्त्री की भूमिका मिट्टी की तरह ग्रहणशील व समावेशी है, जो न सिर्फ पेड़ को बढ़ने में मदद करती है। बल्कि उसकी वृद्धि की सीमा थी तय करती है'।''10 रविन्द्रनाथ टैगोर के जन्मदिन के अवसर पर उनके द्वारा 1916 में अमेरिका में दिए गए एक अधिभाषण के कुछ चुनिंदा अंश। ये उन कुछ एकांकीकारों में से एक है, जो अपने पात्रों को नारी स्वाभिमान की जोत जलाए रखने हेतु गढ़ते है। वह समाज को सार्थक संदेश देते है।

संदर्भ :

1 हिन्दी एकांकियों में सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति, डॉ. म. के गाडगिल, पुस्तक प्रकाशन, पृ.अ.18.

2 जगदीश चंद्र माथुर, 'कलिंग विजय' भोर का तारा संग्रह पृ.अ.51.

3 विनोद रस्तोगी, 'सामान्य और सुहाग' गूंगी मछलियां संग्रह, पृ.अ.134–135.

4 जगदीश चन्द्र माथुर, रीढ की हड्डी, भोर का तारा, संग्रह पृ.अ. 120.

5 वही।

6 वही।

7 जगदीश चंद्र माथुर, भोर का तारा, संग्रह, पृ.अ.147.

8 वही।

9 ओम प्रकाश मालवीय, भारत का इतिहास, भाग – 1, पृ. अ.106.

10 दैनिक भास्कर अधिव्यक्ति– 7 मई 2010 जबलपुर।